कश्मीरी पंडित और अपसंस्कृति

डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्गा

भूमंडलीकरण के इस आधुनिक युग में पश्चिमी अपसंस्कृति के हमारे राष्ट्रीय जीवन पर पड़ रहे दूषित प्रभाव के परिणामों पर हर समझदार व्यक्ति के लिये चिन्ता करना स्वाभाविक है। पर अभी किन्हीं कारणों से समाज में तीव्रगति के साथ फैल रहे इस अपसंस्कृति के प्रदूषण के विरूद्ध किसी भी स्तर से कोई शक्तिशाली स्वर प्रस्फुटित नहीं हो पा रहा है। अब उपयुक्त समय आ गया है जब हम अपनी जीवन शैली में आ रहे इस अनजाने परिवर्तनों की व्यापक समीक्षा करें कि क्या जीवन पद्धति के नये मूल्य और आदर्श जिनको हम अब निसंकोच आत्मसात कर रहे हैं वास्तव में हमको एक सही दिशा की ओर ले जा रहे हैं या फिर हमारी सदियों पुरानी सभ्यता और संस्कृति को समूल नष्ट कर हमें एक ऐसे स्थान पर ला कर पटकेंगे जहां से फिर उबर पाना प्रायः हमारे लिये असम्भव हो जायेगा।

यहां पर यह कहना कदाचित बिलकुल तर्कसंगत होगा कि महाशक्तियों द्वारा रचाये गये इस भूमंडलीकरण के चक्रव्यूह में बहुत ही सुनियोजित तरीके से हमारे समाज के नवयुवकों और नवयुवतियों को निर्द्वन्द व्यक्तिवादी–भोगवादी तथा कानफोड़ शोरवादी संस्कृति परोसी जा रही है जो टिकाऊ बिलकुल नहीं है। वह कुछ क्षण के लिये देखने तथा सुनने में आकर्षक अवश्य है पर उसके दूरगामी परिणाम वास्तव में हमारे छोटे से समाज की ऐसी तैसी करके उसको मटियामेट करने के लिये काफ़ी है। इस प्रदूषण से मुक्ति के लिये अब हमें एक नये जीवन संगीत की तान छेड़नी होगी जो सामूहिक तथा पारस्परिकता पर आधारित हो और जिसमें युवा वर्ग को अपनी ओर आकर्षित करने की अपार शक्ति हो ताकि हम केवल पाश्चात्य उपभोक्तावादी संस्कृति का कचरा मैदान न बन कर रह जाये। हमारे अपने स्वयं के कुछ मूल्य और आदर्श विकसित होने चाहिये जिन पर हम गर्व कर सकें और जो हमारे विकास का सही मायने में प्रतीक बन सकें। यदि हम वास्तव में अपनी संस्कृति, अपनी परम्पराओं और मान्यताओं को संरक्षित रखने के पक्षधर हैं तो हमें गम्भीर हो कर हर स्तर पर सक्रिय रूप से रचनात्मक कार्य करना होगा अन्यथा हमारी चिन्ता केवल एक बौद्धिक अय्याशी बन कर रह जायेगी और कुछ नहीं। वह केवल ख्यालों में पुलाव पकाने के समान होगा जिसमें व्यक्ति सोंचता तो बहुत है पर उसके हाथ लगता कुछ नहीं है। यह केवल एक छलावा है और कुछ नहीं।

आज के समाज का नवधनाढ्य वर्ग जिसके पास अकूत धन है एक बिलकुल नयी पांच सितारा संस्कृति को अपने जीवन का मूल मंत्र मान रहा है और उसको प्राप्त करने के लिए वह सब कुछ करने को सदैव तैयार रहता है। इस नयी विकसित हो रही संस्कृति को दिन की रौशनी से ख़ौफ़ है और रात के अंधेरे से बेइन्तिहा प्यार जहां उसको अपने शबाब पर आने का पूरा अवसर मिलता है। इस संस्कृति के प्रेमियों का आदर्श अमेरिका है। उनका कहना है जम कर कमाओं और ऐश करो मारो या फिर मर जाओ। उनके यह खोखले आदर्श व्यापक समाज में अनेक विसंगतियों को जन्म दे रहे हैं और विवेकहीन युवा वर्ग को अनेक प्रकार के कुकर्मों तथा अपराधों को करने के

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

लिये प्रोत्साहित कर रहे हैं। जिसका बहुत बुरा प्रभाव समाज पर पड़ रहा है। यह सब जानते हुए भी हमारी युवा पीढ़ी इस कामुक संस्कृति का भरपूर आनन्द लेने के लिये बेचैन और बेताब है। इसके दुःखद परिणाम हमको समाचार पत्रों में पढ़ने को अकसर मिलते हैं। मानसिक तनाव से ग्रस्त हो कर या तो कोई आत्म हत्या कर लेता है या फिर वह अपना मानसिक सन्तुलन खो कर अपना जीवन निरर्थक बना देता है। अनेक कुंवारी कन्याऐं अपना या तो कौमार्य खो बैठती है या फिर
गर्भधारण कर बैठने पर आत्म ग्लानी के कारण सामाजिक बहिष्कार के भय से अपनी लीला समाप्त कर लेती हैं इस प्रकार बहुत सी कलियां विकसित हो कर फूल बनने से पहले मसल दी जाती है। स्वाभाविक रूप से युवा पीढ़ी भी हमारे समाज का एक अभिन्न अंग है और देश की भावी कर्णधार है। यदि वह ही लपेटे में आ गयी और अनजाने में ही एड्स का शिकार हो गयी तो फिर देश का क्या होगा। उसका कल्याण फिर कौन करेगा।

हमारे देश में उदारीकरण और स्त्रियों के सशक्तिकरण के दौर में जहां एक ओर महिलाओं के लिये कई दरवाज़े खुल गये हैं और उनको लगभग हर क्षेत्र में पुरूषों से प्रतिस्पर्धा करने का अवसर प्राप्त हो गया है वहीं दूसरी ओर उन्हें एक उपयोग करने वाली वस्तु भी बना दिया गया है। जिसके कारण उनके मन में अनायास ही इस धारणा ने भी जन्म ले लिया है कि उन्हें धन के साथ साथ अपनी देह को भी सुडौल, सुन्दर तथा आकर्षक बनाये रखना है ताकि वह अपने काम करने के स्थान पर सदा कामुक, आमंत्रक लगती रहे और पुरूष वर्ग पर अपने इन्हीं गुणों के कारण वर्चस्व बनाये रहें और अपना उल्लू सीधा करती रहें। इस अन्धी चूहा दौड़ में हमारे देश में न जाने कितनी अबोध अबलायें प्रतिदिन यौन शोषण और बलात्कार का शिकार हो रही है और विवाहेत्तर सम्बन्धों के कारण न जाने कितने घर बर्बाद हो रहे हैं। दूरदर्शन के विभिन्न चैनलों पर प्रसारित धारावाहिक भी इसमें अपना भरपूर योगदान दे रहे हैं जिनको देख कर कुछ विवेकहीन स्त्री तथा पुरूष प्रयोग के तौर पर उनमें बताये हुए नुस्खों को अपने जीवन में अपनाते हैं तथा फिर वाद में पश्चाताप करते हैं जब उनकी समझ में आता है कि वह एक ऐसी अन्धी गली में घुस चुके हैं जिसका कोई अन्त नहीं है और जहां से बच कर निकल पान अब असम्भव बन चुका है।

यह भी एक अजीब विडम्बना है कि यद्यपि उच्च वर्ग की महिलाओं के शिक्षा के स्तर में पिछले कुछ वर्षों में काफ़ी सुधार हुआ है। पर उनकी यह उच्च शिक्षा उनका बौद्धिक विकास कर उनको कलात्मक या सृजनात्मक दिशा में प्रोत्साहित करने के स्थान पर उनको खुलेपन और उच्छूखलता की ओर अधिक प्रेरित कर रही है जहां अपने शरीर के संवेदनशील अंगों का बेहिचक प्रदर्शन, मदिरापान, कांकटेल पार्टियां पब संस्कृति को ही नारी के संबलीकरण का मापदण्ड माना जा रहा है। अब जो भी स्त्री ज़रा सा अवसर पाकर अपना सब कुछ दिखाने को तत्पर रहती है उसको प्रगति का सूचक माना जाता है। यही एक मुख्य कारण है कि अब हिन्दी फिल्मों में नायिका वह सब करने को तैयार रहती है जो कभी कैबरे डान्सर किया करती थी क्योंकि उसको सदा यह भय बना रहता है कि कहीं आईटम गर्ल से वह देह प्रदर्शन में मात न खा जाये। कई सिने तारिकाएं अपनी गोलाईयों को और अधिक उभारने और ध्यानाकर्षित

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

बनाने के लिये अब बिना किसी संकोच के प्रतिष्ठित शैल्य चिकित्सकों का सहारा ले रही है जो उनके उरोंजों को सुडौल और आकर्षक बनाते हैं जो तारिकाओं की सेक्स अपील को कई गुना बढ़ा कर उनको सेक्स बॉम्ब बना देता है और उनकी शो बिजनेस के ग्लैमर में डिमाण्ड बढ़ जाती हैं मीडिया और विज्ञापनों में भी महिलाओं को यह सब करने के लिये खूब प्रेरित किया है जिनमें अधिकतर माडलों को कम वस्त्रों तथा अर्द्धनग्न अवस्था में बड़ी कामुकता के साथ अपने शरीर की गोलाईयों को थिरकाते हुए प्रदर्शित किया जाता है क्योंकि इस धन्धे में बहुत कम समय में करोड़ों रूपयों के वारे न्यारे हो जाते हैं जो अन्य प्रकार के किसी कार्य में कदाचित सम्भव नहीं।

यहां आधुनिक समाज की सबसे बड़ी विसंगति यह है कि जब किसी स्त्री के पास ज्ञान की कमी होती है तो वह जीवन के यह सब सुख–सुविधा के साधन जुटाने के लिये अपनी सुडौल आकर्षक देह का उपयोग करने लगती है, जो पुनः समाज में व्यभिचार को जन्म देता है। जिसका मूल कारण यह तीव्र गति के साथ फैल रही अपसंस्कृति है जो अनेक युवाओं और युवतियों को अपने मोह में फांस कर उनके जीवन को नरक बना रही है। अब समाज में सत्ता, धन और उन्मुक आनन्द का एक विषम त्रिकोण बन गया है जिसका स्त्री एक केन्द्र बिन्दु बन गयी है जिसको अधिकतर लोग केवल मौज मस्ती का एक साधन मानने लगे हैं और वह अब केवल उपयोग की वस्तु बन चुकी है। देश के महानगरों में स्थित कई फ़ार्म हाउस इस नव संस्कृति के पोषक एवं संवाहक बन चुके हैं जहां नित्य पार्टियां, रेन डान्स, फैशन शो, सुन्दरता के लिये प्रतियोगिताएं जैसे कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं जिनमें नवयुवक और नवयुवतियां मद–मस्त हो कर अपने यौवन की गर्मी का भरपूर आनन्द लेते हैं और अपनी कामाग्नी को शान्त करने के पश्चात भोर होते ही एक चुसे हुए आम की भांति अपने घर की ओर अग्रसर होते हैं।

इस अपसंस्कृति का बहुत बुरा प्रभाव अब युवा वर्ग की सोंच पर पड़ रहा है। उनमें से बहुत से अवसाद का शिकार होकर आत्म हत्या कर रहे हैं और इस प्रकार की घटनाओं में निरन्तर तीव्र गति के साथ बढ़ोत्तरी देखी जा रही है। वही अनेक युवाओं में हिंसा और अवज्ञा की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वे अब बिना कुछ संघर्ष किये बहुत कम समय में जीवन की हर उपलब्धि को हासिल करना चाहते हैं क्योंकि उनके पास न तो विवेक है और न किसी कार्य को सुचारू रूप से करने की क्षमता। उनमें बहुत बड़ी संख्या में आन गांव का बलैंडा होते हैं पर वे बहुत ऊँची अभिलाषाएं रखते हैं अब कोई भी युवक कठिन परिश्रम करके कुछ काम करने में विश्वास नहीं रखता हैं यह भी एक बहुत ही ख़तरनाक मनोदशा है क्योंकि समाज का कोई भी वर्ग इस मानसिकता के साथ उन्नति नहीं कर सकता है और न ही उससे किसी प्रकार की प्रगति की आशा की जा सकती है। इन्हीं कारणों से समाज में एक अंधी होड़ मची हुई है और हर व्यक्ति साम, दाम, दंड और भेद अर्थात किसी भी मूल्य पर बिना कोई परिश्रम किये सारे सुख सुविधा के साधन जुटा लेना चाहता है जिसको किसी भी प्रकार से उचित नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि यही मनोदशा भ्रष्टाचार की जननी है।

यह बड़े दुःख की बात है कि अब सारे एहसास एवं संवेदनायें क्षण भंगुर होती जा रही है। हर वस्तु रातों रात बासी हो जाती है। हर प्रकार का सुख दिनो–दिन कम

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com

महसूस होता जा रहा है। अतः प्रतिदिन हृदय एक नयी मौज और नयी मस्ती के लिये लालायित रहता है। जिसके कारण हमारे समाज का संतुलन डगमगा रहा है। समाज में अब स्थिरता घट रही है और अस्थिरता बढ़ रही है। ये मनुष्य में तीन घातक प्रवृत्तियों को जन्म दे रही है। प्रथम अपने आत्म विश्वास में कमी, दूसरे अपने प्रति हिंसा की भावना का जागृत होना और तीसरे औरों के प्रति हिंसा करने की उत्सुकता स्पष्ट रूप से यह तीनों स्थितियां एक स्वस्थ समाज के निर्माण में बाधक है। अतः यह आवश्यक है कि अतिवाद के स्थान पर हम मध्यमवर्गीय मार्ग को प्राथमिकता दें जो हमारे युवा वर्ग को उचित दिशा निर्देश देने की क्षमता रखता हो और हमारी सभ्यता तथा संस्कृति के अनुकूल हो जो हमारी सदियों पुरानी परम्पराओं और मान्यताओं का आदर करते हुए हमें उचित रूप से वास्तविक प्रगति की ओर अग्रसर कर सके ताकि हम अपनी विशिष्ट पहचान को संरक्षित रखते हुए समाज के हर क्षेत्र में नये–नये कीर्तिमान स्थापित कर सकें न कि अपनी विशेष पहचान को समूल नष्ट कर के। हिन्दी के कवि निरंकार देव के शब्दों में :–

''द्वार की ओट से चितवन को बहुत देखा है
मैंने रस–रग परेमन को बहुत देखा है
तुम दिखाने को मुझे यह क्या छटा लाई हो
मैंने इस प्यार के दर्पण को बहुत देखा है

(डॉ0 बैकुण्ठ नाथ शर्मा)
मनोहर निवास,
कश्मीरी मोहल्ला,

लखनऊ – 226 003

PDF created with FinePrint pdfFactory Pro trial version www.pdffactory.com